RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

किसान और हरित क्रांति

डॉ0 मो0 मकसूद आलम

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

आम तौर पर यह सभी मानते हैं कि हरित क्रांति ने भारत को अनाज की कमी देश से, जिसे खाने के लाले पड़े रहते थे एक ऐसे देश में बदल दिया जो आत्मनिर्भर और आत्म–संतुष्ट हो गया, यहां तक कि अनाज इकट्ठा भी होने लगा। यह परिवर्तन उन महत्वपूर्ण तकनीकी सुधारों का नतीजा था जो खास तौर पर साठ के दशक के मध्य से भारतीय कृषि में अपनाए गए। हरित क्रांति वाली नई कृषि रणनीति लागू करने का समय, इसके पीछे काम कर रहे राजनेतिक एवं आर्थिक कारक, इत्यादि प्रश्नों पर काफी बहस चली है। कृषि विकास के स्वरूप, विभिन्न कृषिर वर्गों की स्थिति, खास तौर पर गरीबों और सरकार के वर्गीय संतुलन जैसे मुद्दों पर तीव्र बहसें हुई हैं। यहां हम हरित क्रांति पर विचार करते हुए इन विभिन्न विवादस्पद मुद्दों का उल्लेख करते चलेंगे।

पहले यह समझा जाता था कि 'नेहरू काल' में, अर्थात आजादी से 1964 में उनकी मृत्यु तक, भारतीय कृषि की उपेक्षा की गई, और तकनीकी आधार के बजाए संस्थागत आधार पर जोर दिया गया। अब यह विचार अधिकाधिक बदला जा रहा है। तेजी से उद्योगीकरण करने के अपने सपने पूरा करने के सिलसिले में नेहरू कृषि के विकास की प्रमुखता के प्रति पूरी तरह सचेत थे। प्रथम योजना में ही कृषि पर खर्चा कोई कम नहीं था। खेती और सिंचाई पर कुल योजना खर्चे का 31 प्रतिशत लगाया गया। बाद की सारी योजनाओं में खेती पर 20 से 24 प्रतिशत खर्च किया गया, चाहे जो भी सरकार हो। यह सही है कि प्रथम दों योजनाओं में संस्थागत सुधारों, खासकर सहकारी खेती, से उत्पादन बढ़ने की बहुत ज्यादा अपेक्षाएं की गई थीं, और इस संबंध में कई निर्णय गलत साबित हुए। लेकिन नेहरू शुरू से ही संस्थागत सुधारों के साथ–साथ आधुनिक कृषि का वैज्ञानिक–तकनीकी आधार तैयार करने पर भी जोर दिया करते थे। विशाल सिंचाई और ऊर्जा परियोजनाएं, जैसे भाखड़ा–नांगल, कई कृषि विश्वविद्यालय, शोध प्रयोगशालाएं, कृत्रिम खाद के कारखाने, इत्यादि इस्पात संयत्रों के साथ–साथ नेहरूवादी सपनों के तहत 'आधुनिक भारत के मंदिरों' के रूप में विकसित हुई।

पचास के दशक के अंत और साठ की शुरूआत आते–आते भूमि–सुधार के फायदे, जहां तक संभव था, पूरे–पूरे मिलने लगे थे। साथ ही, प्रसार के आधार पर विकास, अर्थात खेती में अधिक जमीन शामिल करने की संभावना लगभग समाप्त हो रही थी। फलस्वरूप नेहरू ने खेती के तकनीकी विकास पर और भी अधिक जोर देना शुरू किया। आखिर, जापान और चीन जैसे देशों ने भी, जिन्होंने अधिक दूरगामी भूमि–सुधार लागू किए थे, अपनी कृषि विकास–दर बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकी सुधार लागू किए थे। नेहरू के ही जीवन काल में तीसरी योजना में नई कृषि रणनीति लागू की गई। इसके तहत प्रत्येक राज्य में एक जिले के हिसाब से पंद्रह ऐसे जिले चुने गए जो एक नए कृषि कार्यक्रम के लिए प्राकृतिक दृष्टि से अनुकूल थे। यह कार्यक्रम थाः गहन कृषि जिला कार्यक्रम (संक्षेप में आई.ए.डी.वी.)। इसे बाद के वर्षों में अधिक व्यापक बनाया गया। हरित क्रांति के एक महत्वपूर्ण विद्वान जी.एस. भल्ला कहते हैं :

भारत में गुणात्मक तकनीकी परिवर्तन–हरित क्रांति नेहरू के जीवनकाल में नहीं, बल्कि उनकी मृत्यु के बाद हुई; लेकिन इसकी नींव उनके जीवनकाल में ही रखी गई।

लेकिन, साठ ही, साठ के दशक का मध्य आते–आते कई फौरी जरूरतों के समय महत्वपूर्ण वैज्ञानिक खोजें हुईं। इनके मेल से एक ऐसी परिस्थिति पैदा हुई जिसने नवकृषि रणनीति संभव बना दी।

1949 और 1965 के बीच प्रतिवर्ष 3 प्रतिशत की कृषि विकास की प्रशंसायोग्य दर के बावजूद भारत को पचास के दशक के मध्य से ही और साठ के दशक के मध्य में खाद्यान्न की कमी का सामना करना पड़ रहा था। भारत गहन संकट में फंसता जा रहा था। साठ के दशक के आरंभ में कृषि विकास ठहर गया था। शताब्दी के प्रथमार्द्ध में भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर। प्रतिशत थी। आजादी के बाद इसमें भारी वृद्धि हुई, और दर बढ़कर 2.2 प्रतिशत हो गई। प्रति व्यक्ति विकास दर में धीमी लेकिन निरंतर वृद्धि, और नियोजित उद्योगीकरण में भारी निवेश के साथ (जो हर योजना में बढ़ती जा रही थी) भारतीय कृषि पर दूरगामी भार बढ़ता ही चला गया। इससे भोजन की मांग में वृद्धि होने लगी जिसे भारतीय बाजार पूरा नहीं कर पा रहा था। पचास के दशक के मध्य से खाद्यान्नों के दाम बढ़ने लगे। भोजन की कमी को पूरा करने तथा कीमतों को स्थित करने के लिए भारत को खाद्यान्नों का अधिकाधिक आयात करना पड़ रहा था। इसका विकल्प था ग्रामीण क्षेत्रों से खाद्यान्न की जबरन वसूली जिसमें जान–माल का भारी नुकसान होता। यह रास्ता भारत को स्वीकार नहीं था। लेकिन इसे रूस और चीन जैसे देशों ने अपनाया था जिनके पास जनतंत्र के रूप में सुरक्षा की व्यवस्था नहीं थी।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारत ने अमरीका के साथ विवादास्पाद पी.एल.–480 के समझौते किए, जिनके तहत 1956 में अनाज का आयात शुरू किया गया। पहले ही वर्ष इस स्कीम के तहत करीब तीस लाख टन खाद्यान्न आयात किए गए। आयात की मात्रा बढ़ती चली गई, और 1963 में वह 45 लाख टन तक पहुंच गई।

इन्हीं परिस्थितियों में चीन (1962) और पाकिस्तान (1965) के साथ दो युद्ध लड़े गए। साथ ही 1965–66 में लगातार दो बार अकाल पड़ा। फलस्वरूप कृषि उत्पादन में 17 प्रतिशत एवं खाद्यान्न उत्पादन में 20 प्रतिशत की कमी हुई। खाद्यान्नों की कीमतें बढ़ने लगीं। 1965 तथा 1968 के बीच उनके बढ़ने की दर करीब बीस प्रतिशत प्रति वर्ष रही। 1966 में भारत को एक करोड़ टन से अधिक का खाद्यान्न आयातित करना पड़ा। इन्हीं परिस्थितियां पैदा हो रही थीं, अमरीका ने भारत को खाद्यान्न के निर्यात पर रोक लगाने की धमकी दी। भारत–पाक युद्ध वियतनाम संबंधी भारत की नीति, और भारत को अमरीकी नीति मनवाने के इरादे के फलस्वरूप राष्ट्रपति जानसन यह समझ बैठे कि भारत को अपने इशारों पर नचाया जा सकता है। और खाद्यान्न के मामले में अमरीका पर भारत की निर्भरता से अधिक अच्छा मौका इसके लिए क्या हो सकता था!

ऐसे परिप्रेक्ष्य में आर्थिक आत्मनिर्भरता और खाद्यान्न में आत्म–पूर्णता अर्थनीति, यहां तक कि विदेश नीति की जरूरत बन जाती है। नई कृषि रणनीति पूर्णतः अमल में लाई जाने लगी। तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री, खाद्य मंत्री सी. सुब्रमनियम, और इंदिरा गांधी ने, जो शास्त्रीजी के संक्षिप्त कार्यकाल के बाद प्रधानमंत्री बनी थीं, भारतीय कृषि की इस नई रणनीति को तैयार करने और उसे अमल में लाने में पूरा समर्थन दिया। विश्व बैंक द्वारा नियुक्त बेल मिशन ने इस संक्रमण का समर्थन किया और अमरीका ने भी इस पर जोर दिया। लेकिन उन्हें आशा थी कि भारत 'खुले दरवाजे' की नीति पर चलेगा क्योंकि इस प्रकार की नीति के पक्ष में भारत में बड़ा समर्थन तैयार हो रहा था। अच्छी फसल की किस्मों के बीच (नाटे मेक्सिकन गेहूं के उच्च–उत्पाद बीज भारतीय परिस्थितियों के लिए अनुकूल एवं समयोचित साबित हुए), रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाएं, ट्रैक्टर, पंप, इत्यादि जैसी कृषि मशीनें, मिट्टी के प्रयोग की सुविधाएं, कृषि शिक्षा कार्यक्रम, संस्थागत कर्जे, इत्यादि जैसी सुविधाएं उन क्षेत्रों को दी गईं जहां सिंचाई एवं प्राकृतिक तथा अन्य किस्म की अनुकूल परिस्थितियां उपलब्ध थीं। 3 करोड़ बीस लाख एक जमीन, अर्थात कुल जोती गई जमीन, अर्थात कुल जोती गई जमीन का 10 प्रतिशत इस प्रकार के कार्यक्रम लागू करने के लिए शुरू में चुनी गईं।

कृषि में सरकारी निवेश काफी बढ़ गया। खेती को दी जाने वाली संस्थागत वित्तीय मदद 1968 तथा 1973 के बीच दुगुनी हो गई। 1965 में कृषि मूल्य कमिशन बिठाया गया। इसकी कोशिश यह थी कि किसान के लिए निरंतर उत्पादक मूल्य के जरिए बाजार की गारंटी की जाए। सार्वजनिक निवेश, संस्थागत कर्जों, उत्पादक मूल्य और कम कीमत पर नई तकनीक उपलब्ध कराने से किसानों द्वारा निजी निवेश के मुनाफे की क्षमता बढ़ गई। इससे कृषि के क्षेत्र में कुल सकल पूंजी निर्माण अधिक तेजी से बढ़ने लगा। इसका प्रतिबिंब सकल सिंचाई क्षेत्र में वृद्धि में दीख पड़ा। यह हरित क्रांति से पहले के दस लाख हेक्टेयर प्रति वर्ष से बढ़कर सत्तर के दशक में करीब 25 लाख टन हेक्टेयर प्रति वर्ष तक जा पहुंचा। साथ ही, 1960–61 तथा 1970–71 के बीच बिजली और डीजल के पंपसेटों की संख्या 4,21,000 से बढ़कर 24 लाख हो गई, ट्यूब वेलों की संख्या 90,000 से 4,60,000 और ट्रैक्टरों की 31,000 से 1,40,000 हो गई। साथ ही, रासायनिक खादों, नाइट्रोजन और फॉस्फोरस की मात्रा 1960–61 में 3,06,000 मिट्रिक टनों से बढ़कर 1970–72 में 23,50,000 मिट्रिक टन हो गई। इनमें अधिकतर वृद्धि इस अवधि में उत्तरार्द्ध में हुई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जी.एस. भल्ला, 'नेहरू एंड प्लानिंग–च्वायसेज इन एग्रिकल्चर', वर्किंग पेपर सीरीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली, 1990, पृ. 29.
2. लादेजिंस्की पेपर्स, पृ. 494.
3. जी.एस. भल्ला और गुरमैल सिंह, 'टीसेंट डेवलपमेंट्स इन इंडियन एग्रीकल्चरः ए स्टेट लेवल एनालिसिस', ई पी डब्ल्यू, 29 मार्च 1997, बाकी पैरा में आंकड़े इसी स्त्रोत से लिए गए हैं.
4. राज कृष्णा, 'स्मॉल फार्मर्स डेवलपमेंट', ई.पी. डब्ल्यू, 26 मार्च 1979, पृ. 913.
5. जी.एस. भल्ला और जी.के. चड्ढा, 'ग्रीन रिवोल्यूशन एंड द स्मॉल पीजेंट–ए स्टडी ऑफ इनकम डिस्ट्रिब्यूशन इन पंजाब एग्रीकल्चर', ई.पी. डब्ल्यू, 15 और 22 मई 1982.
6. लादेजिंस्की पेपर्स, पृ. 436–440.
7. सी.एच. हनुमंथ राव, 'एग्रीकल्चरः पॉलिसी एंड परफॉर्मन्स', बिमल जालान द्वारा संपादित द इंडियन इकोनोमीः प्रॉब्लेम्स एंड प्रॉस्पेक्ट्स, नई दिल्ली, 1992, पृ. 128–29.
8. डैनियल थॉर्नर, द रोपिंग ऑफ मॉडर्न इंदिरा, पृ. 220 फुटनोट और 224 फुटनोट.
9. सी.एच. हनुमंथ राव, ऊपर उल्लिखित, 129–30, जोर मेरा.
10. एम.एस. स्वामीनाथन, 'ग्रोथ एंड सस्टेनेबिलिटी', फ्रंटलाइन, 9–22 अगस्त 1997

RRIJM 2015, All Rights Reserved